'दायरा' के पोस्टर्स में दिखा करीना कपूर का नया रूप

मेघना गुलजार के निर्देशन में बनी फिल्म 'दायरा' के निर्माताओं ने करीना कपूर खान और पृथ्वीराज सुकुमारन के सोलो पोस्टर्स जारी किए हैं। पोस्टर्स में दोनों कलाकार अपने किरदारों क्रमशः डीसीपी अजोनी कोहली और डीसीपी रमन कुमार के रूप में नजर आ रहे हैं.

करीना कपूर खान डीसीपी अजोनी कोहली के किरदार में बेहद दमदार अंदाज में दिखाई दे रही हैं. उनकी आंखों में गुस्सा और चेहरे पर आत्मविश्वास साफ झलकता है. चलते ट्रकों के बीच दिखाए गए इस पोस्टर में जल्दबाजी, हलचल और रहस्य का माहौल नजर आता है. वहीं, 'दायरा' के लोगो के बीच से गुजरती पुलिस टेप कहानी में एक अलग तरह की सीमा की ओर इशारा करती है. पृथ्वीराज सुकुमारन डीसीपी रमन कुमार के किरदार में शांत लेकिन प्रभावशाली अंदाज में नजर आ रहे हैं. बड़े घास के मैदान में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस के बीच दिखाया गया उनका पोस्टर तनावपूर्ण माहौल को सामने लाता है.

उनके सख्त तेवर और चेहरे पर दिखता गुस्सा इस बात की ओर इशारा करता है कि उनके किरदार के भीतर काफी कुछ चल रहा है. अब दर्शकों की दिलचस्पी इस बात को लेकर है कि उनके किरदार की कहानी आगे किस मोड़ पर जाती है. राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मकार मेघना गुलजार के निर्देशन में बनी 'दायरा' सच्ची घटनाओं से प्रेरित है.

फिल्म की कहानी यश केसवानी, सीमा अग्रवाल और मेघना गुलजार ने लिखी है. यह फिल्म जंगली पिक्चर्स और पेन स्टूडियोज की पहली संयुक्त प्रस्तुति है. साथ ही, यह मेघना गुलजार और जंगली पिक्चर्स की 'तलवार' और 'राजी' के बाद तीसरी साझेदारी है.

51 की उम्र में भी फिट हैं महेश बाबू

डाइट पर देते हैं खास ध्यान

महेश बाबू की फिटनेस और यंग लुक्स अक्सर फैंस के बीच चर्चा का विषय रहते हैं. 51 साल की उम्र में भी उनका लीन और फिट लुक कई लोगों को आकर्षित करता है और इसके पीछे उनकी अनुशासित लाइफस्टाइल की बड़ी भूमिका मानी जाती है. उनकी डाइट को लेकर भी समय-समय पर कई बातें सामने आती रही हैं. एक ऐसा भोजन है, जिससे महेश बाबू दूसरी बनाकर रखते हैं. खास बात यह है कि यह खाना साउथ में काफी पसंद किया जाता है. आइए जानते हैं महेश बाबू की डाइट और इस फूड का पूरा राज.

महेश बाबू डेयरी प्रोडक्ट्स का सेवन नहीं करते और इसी व्यक्तिगत डाइटरी चॉइस के चलते दही चावल भी नहीं खाते. उनकी खाने की आदतों में साफ-सुथरे और नियंत्रित खानपान पर फोकस बताया जाता है. हालांकि, इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि दही चावल हर किसी के लिए अनहेल्दी है. किसी व्यक्ति को इसे खाना चाहिए या नहीं, यह उसकी डाइट, पाचन क्षमता और व्यक्तिगत स्वास्थ्य जरूरतों पर निर्भर करता है. दही चावल दक्षिण भारत का बेहद लोकप्रिय पारंपरिक भोजन है. दही प्रोटीन और कैल्शियम का स्रोत होता है, जबकि चावल शरीर को कार्बोहाइड्रेट और ऊर्जा देता है.

संतुलित डाइट का हिस्सा बनाकर और उचित मात्रा में खाया जाए तो दही चावल कई लोगों के लिए सामान्य डाइट में शामिल किया जा सकता है. इसलिए सिर्फ किसी सेलिब्रिटी की डाइट देखकर इस फूड को अपनी डाइट से हटाना जरूरी नहीं है. महेश बाबू की डाइट को लेकर सामने आई जानकारी में बताया गया है कि वह कुछ प्रोसेस्ड और हाई-कैलोरी फूड्स से भी दूरी रखते हैं. उनके खानपान में सब्जियों को प्राथमिकता देने की बात सामने आई है.

दिलों में बसा है जन्माष्टमी का खूबसूरत भजन

जावेद अख्तर की कलम से कई कालजयी और यादगार गाने निकले हैं. जावेद अख्तर और एआर रहमान की जोड़ी बॉलीवुड की सबसे हिट जोड़ी है. दोनों ने साथ मिलकर कई यादगार गीत दिए हैं. दिग्गज गीतकार यूं तो मिनटों में गाना लिख लेते हैं लेकिन एक भजन ऐसा है जिसे लिखने में उन्हें पसीना आ गया था. जावेद अख्तर ने खुद एक इंटरव्यू में खुलासा किया था कि उन्हें ये गाना लिखने में बहुत परेशानी हुई थी. हालांकि 25 साल बाद भी ये गाना लोगों की जुबां पर चढ़ा हुआ है.

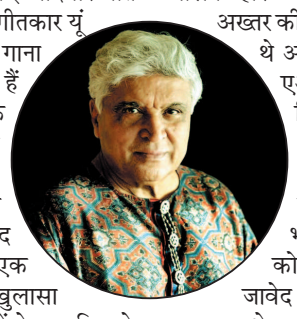

साल 2001 में आशुतोष गोवारिकर की फिल्म 'लगान' आई थी जिसमें कृष्ण भक्ति पर 2 गीत थे. कृष्ण भक्ति पर बने ये दोनों गीत एआर रहमान और जावेद अख्तर ने बनाए थे. लेकिन आज जिस भजन की बात कर रहे हैं वो 'ओ पालन हारी' है. 'ओ पालन हारे' के बोल जावेद अख्तर की कलम से निकले थे और इसको संगीत एआर रहमान ने दिया था.

ओ पालन हारे' एक गाने से ज्यादा से एक भजन है. इस गाने को लिखते हुए जावेद अख्तर के पसीने छूट गए थे. उन्होंने खुद अपने इंटरव्यू में कहा था कि वो एक नास्तिक इंसान हैं और जब उन्हें आशुतोष गोवारिकर ने फिल्म के सिचुएशन के हिसाब से भजन लिखने को कहा तो वो दुविधा में फंस गए थे.

एक्टिंग में फिर चमके रॉकिंग स्टार यश

केजीएफ जैसी ब्लॉकबस्टर फ्रैंचाइजी से पूरे देश में अपनी अलग पहचान बनाने वाले रॉकिंग स्टार यश की 'टॉक्सिक: अ फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' से बॉक्स ऑफिस पर ऐतिहासिक प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही थी. फिल्म को लेकर रिलीज से पहले ही जबरदस्त चर्चा थी और माना जा रहा था कि यश की स्टार पावर इसे कई बड़े रिकॉर्ड तक पहुंचा सकती है. फिल्म ने टिकट खिड़की पर अच्छी शुरुआत भी की, लेकिन इसके बाद कमाई की रफ्तार उम्मीदों के मुताबिक नहीं बढ़ सकी. यश एक बार फिर अपने अभिनय और पर्दे पर प्रभावशाली मौजूदगी से प्रभावित करते हैं. उनका किरदार फिल्म की सबसे बड़ी ताकतों में शामिल है. बावजूद इसके फिल्म को कुछ ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिन्होंने इसके कारोबार की गति को सीमित कर दिया. पहला बड़ा कारण फिल्म में हिंसा का अधिक होना है. 'टॉक्सिक' का संसार बेहद अंधेरा और हिंसक है. यह प्रस्तुति एक खास दर्शक वर्ग को आकर्षित करती है, लेकिन पारिवारिक दर्शकों के लिए फिल्म से जुड़ना मुश्किल हो जाता है.

मिर्जापुर : द मूवी' पर चली सेंसर की कैंची

मिर्जापुर की दुनिया अब बड़े पर्दे पर दस्तक देने जा रही है और रिलीज से पहले ही फिल्म सेंसर बोर्ड की वजह से चर्चा में आ गई है. गैंगस्टर ड्रामा को सेंट्रल बोर्ड ऑफ़ फिल्म सर्टिफिकेशन से 'ए' सर्टिफिकेट मिला है. लेकिन इसके लिए मेकर्स को कई बदलाव करने पड़े.

खास बात यह है कि सेंसर की कैंची का असर सिर्फ डायलॉग्स तक सीमित नहीं रहा, बल्कि फिल्म के कुछ विजुअल्स में भी बदलाव किए गए. हिंसा और गोर दिखाने वाले सीन्स को लेकर कोई कट नहीं लगाया गया. अब फिल्म की सेंसर रिपोर्ट सामने आने के बाद इसकी रिलीज को लेकर उत्सुकता और बढ़ गई है. सीबीएफसी ने फिल्म को सर्टिफिकेट देने से पहले कई बदलाव करने को कहा. रिपोर्ट के मुताबिक, चार जगह गाली वाले शब्दों को म्यूट किया गया, जबकि छह जगह आपत्तिजनक शब्दों को उपयुक्त शब्दों से बदला गया.

टेलीविजन हलचल

आरंभी-ध्रुव की नजदीकी बनी विश्वास के गुस्से की वजह

कलर्स के धारावाहिक 'डॉ. आरंभी' में कहानी अब एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है, जहां रिश्तों के साथ-साथ आरंभी के बेटे विहान की जिंदगी भी खतरे में पड़ती नजर आ रही है. आरंभी और ध्रुव के बीच बढ़ती नजदीकियों से विश्वास बुरी तरह परेशान है. वह आरंभी को ध्रुव का साथ मिलता देख अपनी असुरक्षा और गुस्से पर काबू नहीं रख पाता. आने वाले एपिसोड में विश्वास इसी जलन में ध्रुव के खिलाफ ऐसी साजिश रचता दिखाई देगा, जिससे कहानी में बड़ा भूचाल आने वाला है. इससे पहले आरंभी अपने आत्मसम्मान का अपमान करने वाले विश्वास को थप्पड़ मार देती है. इस घटना के बाद वह खुद भी भावनात्मक रूप से टूट जाती है. अपने जीवन में चल रही परेशानियों और विहान की सुरक्षा को लेकर चिंतित आरंभी भगवान के सामने रोते हुए अपनी पीड़ा जाहिर करती है. आरंभी भले ही विश्वास के साथ अक्सर बहस करती रही हो, लेकिन शारीरिक टकराव की घटना उसके लिए बेहद मुश्किल साबित होती है. वह अपने गुस्से और दर्द को संभाल नहीं पाती. ऐसे समय में ध्रुव उसके लिए सहारा बनकर सामने आता है. ध्रुव हमेशा की तरह आरंभी का हौसला बढ़ाने की कोशिश करता है. वह फूलों की पंखुड़ियां बरसाकर और मजाकिया अंदाज में उससे बातें करके उसके चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश करता है.

कृषि जगत

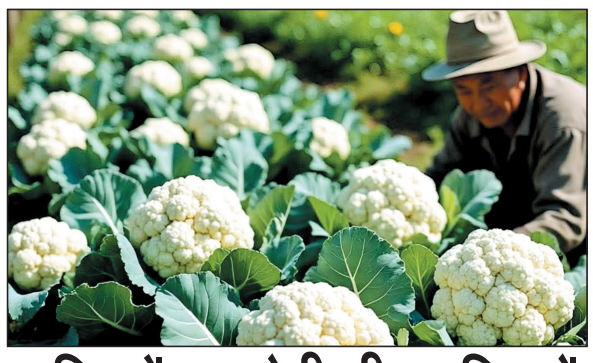

बारिश में फूलगोभी की इन किस्मों से पाएं कम समय में उपज

बारिश के मौसम में फूलगोभी की अगेती खेती किसानों के लिए कम अवधि में फसल तैयार कर बाजार में जल्दी पहुंचाने का अवसर दे सकती है. लेकिन इस खेती में सफलता के लिए सबसे अहम कदम है—मौसम और क्षेत्र के अनुकूल किस्म का चुनाव. गलत समय पर गलत किस्म लगाने से पौधों की बढ़वार प्रभावित हो सकती है और फूलों की गुणवत्ता पर भी असर पड़ सकता है. इसलिए खेत में पौध लगाने से पहले किसान को किस्म, रोपाई का समय और फसल प्रबंधन की पूरी योजना तैयार करनी चाहिए.

अगेती फूलगोभी के लिए किसानों को ऐसी किस्मों का चयन करना चाहिए जिनका विकास अपेक्षाकृत कम अवधि में हो और जो उस क्षेत्र के तापमान के अनुरूप बेहतर प्रदर्शन कर सकें. पूसा मेघना, पूसा कार्तिक और पूसा हाइब्रिड-2 जैसी किस्मों को अगेती फूलगोभी के विकल्पों में शामिल किया जाता है. इसके अलावा स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र या उद्यानिकी विभाग द्वारा क्षेत्र के लिए अनुशंसित संकर किस्मों को प्राथमिकता देना अधिक सुरक्षित विकल्प हो सकता है. बारिश में खेती करते समय खेत की जल निकासी सबसे महत्वपूर्ण है.

फूलगोभी के खेत में लंबे समय तक पानी जमा रहने पर जड़ों को नुकसान पहुंच सकता है और पौधों में रोग का खतरा बढ़ सकता है. इसलिए खेत की तैयारी के दौरान उचित जल निकासी की व्यवस्था करनी चाहिए. जरूरत के अनुसार ऊंची क्यारियां या मेड़ बनाकर भी अतिरिक्त पानी की समस्या को कम किया जा सकता है. पौध तैयार करते समय स्वस्थ और रोगमुक्त बीज का इस्तेमाल करना चाहिए.

फूलगोभी को संतुलित पोषण देने के लिए मिट्टी की जांच के आधार पर खाद और उर्वरक का इस्तेमाल करना बेहतर रहता है. अत्यधिक नाइट्रोजन देने से पौधों की अनावश्यक बढ़वार हो सकती है और फूल की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है. इसलिए पोषक तत्वों का संतुलित प्रबंधन जरूरी है.

गेंदे की खेती का ऐसे करें सही नियोजन, बढ़ेगा मुनाफा

गेंदे की खेती किसानों के लिए कम अवधि में फूल उत्पादन का एक उपयोगी विकल्प हो सकती है. पूजा-पाठ, धार्मिक कार्यक्रमों, शादी-विवाह, सजावट और अन्य आयोजनों में गेंदे के फूलों की मांग बनी रहती है. ऐसे में किसान यदि बाजार की जरूरत को ध्यान में रखकर खेती की योजना तैयार करें तो उत्पादन के साथ बेहतर कीमत हासिल करने की संभावना भी बढ़ सकती है. हालांकि, इसके लिए खेत में पौधे लगाने से पहले पूरी फसल योजना तैयार करना जरूरी है.

गेंदे की खेती का नियोजन सबसे पहले खेत और मिट्टी के चयन से शुरू होता है. खेत ऐसी जगह होना चाहिए जहां पर्याप्त धूप मिले और पानी की निकासी अच्छी हो. जलभराव वाली जमीन में पौधों की जड़ों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है. खेती शुरू करने से पहले मिट्टी की जांच कराने से उसमें उपलब्ध पोषक तत्वों की स्थिति का पता लगाया जा सकता है और उसी आधार पर खाद एवं उर्वरक प्रबंधन की योजना बनाई जा सकती है.

धान की फसल को कीटों से बचाने का जानें आसान तरीका

धान की खेती कर रहे किसानों के लिए बारिश का मौसम फसल प्रबंधन के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण होता है. इस दौरान खेतों में नमी और उमस बढ़ने के साथ कई कीटों का प्रकोप भी दिखाई दे सकता है. तना छेदक, पत्ती लपेटक, गंधी बग और रस चूसने वाले कीट धान की फसल को नुकसान पहुंचा सकते हैं.

यदि शुरुआती स्तर पर इनकी पहचान कर उचित नियंत्रण नहीं किया गया तो पौधों की बढ़वार, बालियों के विकास और दानों की गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है.धान में कीट नियंत्रण का पहला कदम नियमित निगरानी है. किसानों को सप्ताह में कई बार खेत का निरीक्षण करना चाहिए और पौधों की पत्तियों तथा तनों पर नजर रखनी चाहिए. तना छेदक के प्रकोप में बीच की पत्ती सूखकर आसानी से बाहर निकलने लगती है, जिसे 'डेड हार्ट' कहा जाता है. बालियां निकलने के बाद प्रभावित पौधों में सफेद बालियां दिखाई दे सकती हैं. इसी तरह पत्ती लपेटक कीट पत्तियों को मोड़कर उनके अंदर का हरा भाग खाता है.कीटों की शुरुआती संख्या कम होने पर खेत की उचित निगरानी और जैविक नियंत्रण उपायों को प्राथमिकता दी जा सकती है.

बारिश में बकरियों को खिलाएं हरा चारा, सेहत रहेगी दुरुस्त

बारिश का मौसम बकरी पालकों के लिए हरे चारे की उपलब्धता के लिहाज से काफी उपयोगी माना जाता है. इस दौरान खेतों, मेड़ों और आसपास के क्षेत्रों में कई तरह की हरी वनस्पतियां और पेड़ों की पत्तियां उपलब्ध हो जाती हैं. यदि सुरक्षित और पौष्टिक पत्तियों को संतुलित आहार का हिस्सा बनाया जाए तो बकरियों की सामान्य सेहत और बढ़वार को बनाए रखने में मदद मिल सकती है.

हालांकि, बारिश के मौसम में चारे की गुणवत्ता और स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना जरूरी है. बकरियों को पत्तियां खिलाते समय पशुपालकों को सबसे पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पौधा पशुओं के लिए सुरक्षित है. अनजान पौधों या जहरीली वनस्पतियों की पत्तियां बकरियों को नहीं खिलानी चाहिए. इसके अलावा सड़क किनारे, नालियों के आसपास या ऐसे खेतों से पत्तियां नहीं लानी चाहिए जहां हाल में कीटनाशक या अन्य रसायनों का छिड़काव हुआ हो. बारिश में नमी अधिक होने के कारण गीली, सड़ी या फफूंद लगी पत्तियां पशुओं के लिए परेशानी का कारण बन सकती हैं. इसलिए चारा खिलाने से पहले उसकी अच्छी तरह जांच करना जरूरी है.

यंग इंडिया

ग्रेजुएट हैं तो तैयार रखें दस्तावेज

आरआरबी क्लर्क भर्ती आवेदन आज से

बैंकिंग क्षेत्र में सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए अच्छी खबर है. आईबीपीएस की ओर से क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में ऑफिस असिस्टेंट यानी आरआरबी क्लर्क के पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू होने वाली है. आवेदन प्रक्रिया आज से शुरू होगा.

उम्मीदवार 21 सितंबर 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे. ऐसे में पात्र अभ्यर्थियों के पास आवेदन करने के लिए करीब तीन सप्ताह का समय रहेगा. भर्ती से जुड़ी अंतिम और विस्तृत जानकारी आईबीपीएस की आधिकारिक अधिसूचना जारी होने के बाद ही सामने आएगी.

आरआरबी ऑफिस असिस्टेंट पद उन युवाओं के लिए अहम माना जाता है, जो बैंकिंग क्षेत्र में करियर बनाना चाहते हैं. इस भर्ती प्रक्रिया में उम्मीदवारों का चयन परीक्षा के माध्यम से किया जाएगा. प्रारंभिक परीक्षा दिसंबर 2026 में आयोजित हो सकती है, जबकि मुख्य परीक्षा जनवरी 2027 में प्रस्तावित है. परीक्षा की सटीक तारीख, परीक्षा केंद्र, पाठ्यक्रम, आवेदन शुल्क और चयन प्रक्रिया से जुड़ी विस्तृत जानकारी आधिकारिक नोटिफिकेशन में दी जाएगी.आवेदन शुरू होने से पहले वे अपनी पात्रता और जरूरी दस्तावेजों की जांच कर लें.

आवेदन करते समय शैक्षणिक प्रमाणपत्र, पहचान पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, हस्ताक्षर और अन्य आवश्यक दस्तावेजों की जरूरत पड़ सकती है. आवेदन पत्र में नाम, जन्मतिथि, शैक्षणिक विवरण और अन्य जानकारियां सावधानी से भरना जरूरी होगा. आरआरबी क्लर्क भर्ती में पदों की कुल संख्या भी उम्मीदवारों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी होगी.

रेलवे में 4471 पदों पर भर्ती

10वीं-आईटीआई वाले करें आवेदन

रेलवे में अप्रेंटिसशिप के जरिए करियर की शुरुआत करने की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए बड़ी खबर है. साउदर्न रेलवे ने अप्रेंटिस भर्ती 2026-27 के लिए 4471 पदों पर आवेदन आमंत्रित किए हैं. रेलवे एक्ट, 1961 के तहत होने वाली इस भर्ती में फ्रेशर और एक्स-आईटीआई उम्मीदवारों को अलग-अलग श्रेणियों में अवसर दिया गया है. ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया 28 अगस्त 2026 से शुरू हो चुकी है और इच्छुक उम्मीदवार 27 सितंबर 2026 शाम 5 बजे तक आवेदन कर सकते हैं.

भर्ती में अलग-अलग तकनीकी और गैर-तकनीकी ट्रेड शामिल किए गए हैं. इनमें फिटर, वेल्डर, इलेक्ट्रीशियन, कारपेंटर, पेंटर, डीजल मैकेनिक, वायरमैन, ड्राफ्ट्समैन, सीओपीए, पीएएसएए, इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक और एमएलटी जैसे ट्रेड शामिल हैं. कुल 4471 पदों में 163 पद फ्रेशर उम्मीदवारों के लिए रखे गए हैं, जबकि 4308 पद एक्स-आईटीआई उम्मीदवारों के लिए हैं. योग्यता की बात करें तो फ्रेशर श्रेणी में आवेदन करने वाले उम्मीदवारों के लिए संबंधित ट्रेड के अनुसार 10वीं या 12वीं पास होना जरूरी है. सामान्य तौर पर न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक की शर्त रखी गई है. वहीं एक्स-आईटीआई उम्मीदवारों के पास 10वीं पास होने के साथ संबंधित ट्रेड में एनसीवीटी या एससीवीटी से मान्यता प्राप्त आईटीआई प्रमाणपत्र होना चाहिए. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और दिव्यांग उम्मीदवारों को 10वीं में 50 प्रतिशत अंकों की शर्त से छूट दी गई है. चयनित उम्मीदवारों को स्टाइपेंड भी दिया जाएगा.

यूपी में 12वीं पास महिलाओं के लिए आंगनवाड़ी भर्ती का मौका

उत्तर प्रदेश में 12वीं पास महिलाओं के लिए सरकारी क्षेत्र में रोजगार पाने का शानदार अवसर सामने आया है. बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग ने आंगनवाड़ी सहायिका भर्ती 2026 के लिए राज्य के कई जिलों में आवेदन आमंत्रित किए हैं. इस भर्ती अभियान में 22 से अधिक जिलों में रिक्त पदों को भरा जाएगा. पात्र महिला उम्मीदवारों के लिए सबसे बड़ी राहत यह है कि आवेदन के लिए किसी तरह का शुल्क नहीं लिया जाएगा. यानी सभी वर्गों की महिलाएं शून्य शुल्क में ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं.

भर्ती में मथुरा, कुशीनगर, कानपुर नगर, चित्रकूट और महाराजगंज समेत कई जिले शामिल हैं. उपलब्ध जानकारी के अनुसार मथुरा में 544, कानपुर नगर में 307, कुशीनगर में 214, महाराजगंज में 141 और चित्रकूट में 69 पदों पर भर्ती होनी है. इसके अलावा बागपत, बिजनौर, औरैया, श्रावस्ती, चंदौली, मैनपुरी और देवरिया समेत अन्य जिलों में भी भर्ती प्रक्रिया से जुड़ी गतिविधियां चल रही हैं. उम्मीदवारों को अपने जिले की अधिसूचना में आवेदन की अंतिम तारीख जरूर जांचनी होगी, क्योंकि सभी जिलों के लिए समय-सीमा एक जैसी नहीं है.

आवेदन के लिए महिला उम्मीदवार का किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 12वीं पास होना जरूरी है. इसके साथ ही स्थानीय निवासी की शर्त भी महत्वपूर्ण है. अभ्यर्थी जिस वार्ड, ग्राम पंचायत या न्याय पंचायत के लिए आवेदन कर रही है, उसे उसी क्षेत्र की मूल निवासी होना चाहिए. दूसरे क्षेत्र की महिला उस पद के लिए पात्र नहीं मानी जाएगी. आयु सीमा की बात करें तो उम्मीदवार की उम्र न्यूनतम 18 और अधिकतम 35 वर्ष होनी चाहिए. आरक्षित वर्ग की महिलाओं को सरकारी नियमों के अनुसार आयु सीमा में छूट दी जाएगी.